चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Savera Times	03.03.2024	--	--

CSSHAU conducted Training program on Utility of mineral mixture in animal feed

@TheSaveraTimes
Network

Hisar: Under the Farmer First Program running under the Directorate of Extension Education of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, a one-day training program was organized for the farmers on the topic "Utility of mineral mixture in animal feed". Farmers from Payal and Chirod villages of Hisar district participated in this program. Dr. Ashok Godara, principal investigator of the Farmer First Program, said that the main objective of this program is to provide information to the animal farmers about maintaining the health of the animals and increasing milk production so that the income of the farmers can be increased. Farmer First Program (FFP) is an initiative of ICAR to give importance to the complex, diverse and risky realities of smallholder agriculture and majority of farmers by enhancing farmer-scientist interface, besides enhancing production and productivity. He said that under this programme, special emphasis is given on production management in agriculture including resource management, climate resilient agriculture, storage, market, supply chain, value chain, innovation, information system etc. In the program, animal nutrition scientist Dr. Sajjan Sihag advised to feed balanced diet to the animals as per their condition, which includes green fodder, dry fodder, bran and mineral mixture. He said that due to lack of mineral mixture inside the animal, the animal does not have stiffness and does not produce new milk, the animal drinks urine, licks the wall, eats clothes, cow dung and soil.

Therefore, keep giving mineral mixture to the animals daily throughout the year, it will be very beneficial for the animals. Dr. Satpal, agronomist of the fodder section, gave information about crop cycles to provide green fodder throughout the year for the production of green fodder and good health of animals.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	3-3-24	4	7-8

पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया प्रशिक्षण कार्यक्रम

हकृवि में पशु आहार के लिए आयोजित प्रशिक्षण में उपस्थित किसान

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए ''पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सके। फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम एफएफपी के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नही दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	3.3.24	2	2-5

प्रशिक्षण में मौजूद वैज्ञानिक व पशुपालक।

हकृवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिसार, 2 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए ''पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है, ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफ.एफ.पी.) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आई.सी.ए.आर. की एक पहल है।

उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एस.आर.एफ. डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	3.7.24	13	2-6

हकृवि में पशुपालकों को पशुओं के आहार पर दिया गया प्रशिक्षण

पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण का इस्तेमाल जरूरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।

हिसार। हकृवि में आयोजित प्रशिक्षण में मौजूद वैज्ञानिक व पशुपालक।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने के लिए फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	3-3-24	2	1-4

प्रशिक्षण

एचएयू में किसानों के लिए पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता विषय पर हुआ कार्यक्रम

'मिनरल मिक्सचर को पशु चारे में करें शामिल'

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए 'पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं।

एचएयू में आयोजित प्रशिक्षण में मौजूद वैज्ञानिक व पशुपालक। संवाद

इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं का स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सके।

प्रोग्राम के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है।

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने के लिए फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट महत्वपूर्ण इनपुट के तौर पर निशुल्क वितरित किए गए। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एचएस सहारण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	02.03.2024	--	--

हकृवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिसार के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए ''पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सके। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली

वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकडऩ व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छेस्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नही दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, लोबिया आदि फसलों की बिजाई कर सकते हैं।

मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की किस्म जैसे एस.एस. जी 59-3 व सीएसवी 33 एमएफ (अनंत) व सीएसएच 24 एमएफ की बिजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पांच कटाईयों में नवंबर तक हरा चारा मिलता रहेगा।इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	02.03.2024	--	--

हकृवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को

उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, लोबिया आदि फसलों की बिजाई कर सकते हैं। मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की किस्म जैसे एस.एस. जी 59-3 व सीएसवी 33 एमएफ (अनंत) व सीएसएच 24 एमएफ की बिजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पांच कटाईयों में नवंबर तक हरा चारा मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट महत्वपूर्ण इनपुट के तौर पर निशुल्क वितरित किए गए। इस अवसर पर पीथ रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. बिद्दू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.03.2024	--	--

हकृवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया आयोजन

पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य : डॉ. गोदारा

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए ''पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गोभा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. संतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते है, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, लोबिया आदि फसलों की बिजाई कर सकते हैं। मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की किस्म जैसे एस.एस. जी 59-3 व सीएसव्ही 33 एमएफ (अनंत) व सीएसएच 24 एमएफ की बिजाई कर सकते है, जिससे चार से पांच कटाईयों में नवंबर तक हरा चारा मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट महत्वपूर्ण इनपुट के तौर पर निशुल्क वितरित किए गए। इस अवसर पर पीपी रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	02.03.2024	--	--

हकृवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 2 मार्च। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में

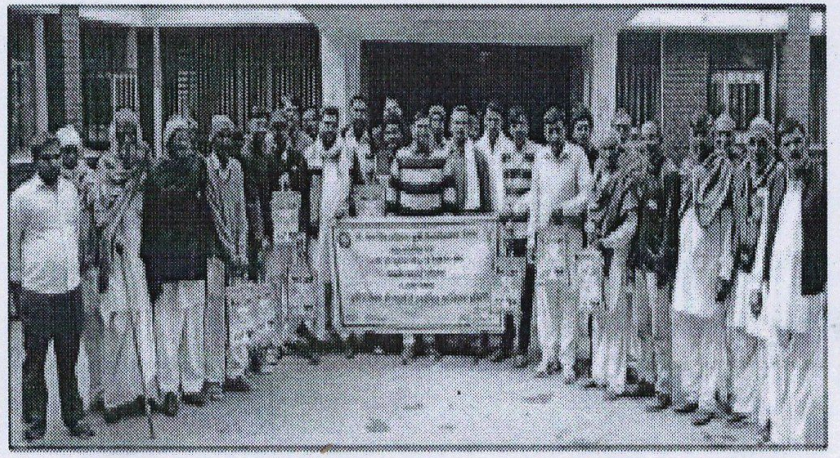

संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सत्यवान सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण चारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा। चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है। उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, लोबिया आदि फसलों की बिजाई कर सकते हैं। मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की किस्म जैसे एस.एस. जी 59-3 व सीएसवी 33 एमएफ (अनंत) व सीएसएच 24 एमएफ की बिजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पांच कटाईयों में नवंबर तक हरा चारा मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट निशुल्क वितरित किए गए। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. विद्यु राम भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	5.3.24	2	5-8

मोतियों की खेती से किसान कमा सकते हैं लाखों रुपये

शिवानी सेहरा

कृत्रिम मोती तैयार कर 12 से 18 महीने में 3 लाख रुपये तक कमा सकते हैं किसान

हिसार। आधुनिक दौर में किसान कम लागत और स्मार्ट तरीके से खेती करने लगे हैं। किसान 2 से 3 साल पुराने मछली के तालाब में कृत्रिम मोतियों की खेती करके 12 से 18 महीने में 3 लाख रुपये तक कमा सकते हैं।

मोती की मांग घरेलू बाजार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में हमेशा बनी रहती है। किसान वैज्ञानिक विधि से और प्रशिक्षण लेकर अच्छी गुणवत्ता वाले मोती की खेती कर इसे बाजारों में बेचकर काफी मुनाफा कमा सकते हैं। मोती एवं अन्य जलीय खेती के लिए केंद्र और राज्य सरकार सब्सिडी भी दे रही हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि मोती की खेती की शुरुआत 1905 में जापान से हुई थी। भारत में मीठे जल वाले मछली के तालाबों और झीलों में मोती पालन के लिए इस्तेमाल होने वाली आम प्रजातियां हैं, लैमिलीडेन्स मार्जिनेलिस, लैमिलीडेन्स कोरिआनस और पेरेशिया कोरूगाटा। एचएयू में स्थित मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय जो हरियाणा में अपनी तरह का पहला महाविद्यालय है और विभिन्न प्रकार की जलीय खेती के प्रशिक्षण देता रहता है, जिसमें मोती की खेती भी शामिल है। संवाद

सीप के शैल में कृत्रिम तरीके से नाभिक डालते हैं

मोती एक प्राकृतिक रत्न है, जो सीप से पैदा होता है। प्राकृतिक वातावरण में सीप के शैल के अंदर बाहरी कणों के प्रवेश करने से मोती का निर्माण होता है, लेकिन कृत्रिम मोतियों की खेती मीठे पानी के तालाब में सीपों के शैल के अंदर कृत्रिम तरीके से नाभिक को डालकर कर सकते हैं। सीप के अंदर जिस डिजाइन का नाभिक डालते हैं उसी डिजाइन का मोती निकलता है।

“ सीपियों के सहारे किसान मोती उत्पादन कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। पहले सीपियों को घर पर बने छोटे तालाब या बड़े टैंकों में वातावरण अनुकूल ढालने के लिए 10 दिन तक छोड़ना होगा। इसके बाद उनमें न्यूक्लीयस डालकर एंटीबॉयोटिक सोल्यूशन में रखा जाता है। सभी सीपों को 12-18 माह तक नायलान के बैग्स में तालाब में छोड़ा जाता है। 50 हजार रुपये से इसकी खेती शुरू कर सकते हैं।

-डॉ. धर्मबीर मलिक, एसोसिएट प्रोफेसर, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय